बारिश में गाँव

ज्ञान चतुर्वेदी

मेरी स्कूली शिक्षा गाँव में हुई है। सो बचपन गाँव में बीता। बारिश का मौसम आता है तो गाँव मुझे दूसरी तरह से बहुत याद आता है। गाँव में एक अधपक्की-सी सड़क थी। बाकि तो कच्ची गलियाँ थीं – धूल, मिट्टी भरीं। अधिकाँश मकान भी कच्चे, कवेलू वाले थे। पक्के मकान गिने-चुने थे। मेरे पिता डॉक्टर थे सो हमारा बड़ा-सा बंगला था। मेरे ज़्यादातर दोस्त कच्चे घरों में रहने वाले किसानों के बच्चे थे। एक नदी थी जो बारिश में उफनकर बहती, बाकी पूरे साल पतली-सी धारा रह जाती।

बारिश आती तो कच्ची गलियों में छोटी-छोटी नदियाँ बह निकलतीं। गली की मिट्टी छन जाती। कीचड़, पानी से ज़मीन रपटीली हो जाती। गली में फिसलकर गिरने का कोई बुरा न मानता। बारिश में गाँवों में यह होता ही था। सब तरफ कीचड़। लोग नंगे पाँव होते क्योंकि जूते पाँवों से ज़्यादा हाथों में लेकर कीचड़ पार करना पड़ता। हाँ, रपटने-फिसलने से यह फायदा अवश्य होता कि हम लोग गाँव में बहुत सारी दूरियाँ फिसलकर ही तय कर लेते थे। मेहनत कम लगती थी, स्पीड बढ़िया रहती और स्कूल समय पर पहुँच जाते थे। भीगते हुए ही हम स्कूल जाते। बरसाती तब गाँव में होती नहीं थी और छाता बस हेड मास्साब ही लगाते थे। बच्चे भीगते, भागते, फिसलते, उठते, गिरते कक्षा में पहुँचते और कक्षा में बैठे-बैठे ही सूखते रहते। मास्साब की संटी अवश्य गीली रहती थी जो बारिश में पिटाई को एक नई पहचान तथा करारापन देती थी।

स्कूल की इमारत बहुत पुरानी थी। किसी को पता नहीं था कि वह कब बनी थी। सब यही कहते कि हमारे पैदा होने से पहले की है। लगता था मानो धरती बनने के साथ ही बनी होगी। इस इमारत में कुछ पक्के कमरे थे बाकी कवेलू और ईंट वाले। बहुत से इतने खस्ताहाल हिस्से थे कि वे गिरने और अटकने के बीच कहीं थे। फर्श का सीमेंट यहाँ-वहाँ से उधड़ा हुआ था। दीवारों का पलस्तर झर गया था तथा दीवार से ईंट पसलियों-सी झाँकती। बारिश में इस इमारत की अग्निपरीक्षा हो जाती कि इस बार गिर जाएगी या नहीं। हर बार लगता कि ज़रूर गिर जाएगी लेकिन गिरती नहीं। स्कूल की छत से इतना पानी चूता कि बाहर से ज़्यादा पानी अन्दर कक्षा में बरसता था। हम टपकों से बचने के लिए यहाँ-वहाँ खिसकते रहते। सूखे कोनों में छात्रों की भीड़ मच जाती। सूखी जगह के लिए धक्का- मुक्की होती। छत के अलावा खिड़की से भी पानी आता। जब बहुत पानी होता तो "रेनीडे" (बारिश का दिन) की छुट्टी हो जाती। पढ़ाई धेले की नहीं हो पाती क्योंकि शिक्षक से लगाकर बच्चे तक टपकते पानी से बचने में लगे रहते।

बारिश में वह पतली नदी चढ़ जाती। बहुत से बच्चे चढ़ी नदी में कूदते-तैरते थे। मैं डरपोक था, या शायद ज़्यादा समझदार। मैं स्वयं कभी भी चढ़ी नदी में कूदने की हिम्मत नहीं जुटा पाया परन्तु मैंने ऐसा करने की प्रेरणा बहुतों को दी। बच्चों को चढ़ी नदी में तैरकर दिखाने की चुनौती देकर मैं उनके आत्मसम्मान को ललकारता। मेरा एक मित्र इसी शेखी में कूद तो गया पर उफनती नदी में बहता-गोतेखाता किसी तरह खजूर के एक पेड़ में जा अटका। चारों और पानी। तेज़ बहता। भँवर और धाराएँ। बीच में खड़ा लहराता-सा खजूर। उस पर अटका मेरा दोस्त। बचाओ, बचाओ करता। किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। गाँव इकट्ठा हो गया था। तेज़ पानी। कौन तैरकर जाए और बचाए? तब तक दोस्त के पिता भी आ गए थे। वे अच्छे तैराक थे लेकिन डर उनको भी लग रहा था। उन्होंने पहले तो पुल पर खड़े होकर खजूर पर अटकी औलाद को खूब गालियाँ दीं। गालियाँ

खत्म हो जाने पर तथा कुछ गालियाँ दो-दो बार दे चुकने के बाद वे पानी में कूद गए। तैरते हुए वे खजूर तक पहुँचे। तैरते-तैरते ही उन्होंने खजूर पर अटके बेटे की बढ़िया ठुकाई की और साथ में तैराते हुए किनारे ले आए। किनारे पर उन्होंने शेष ठुकाई सम्पन्न की।

बारिश आते ही इतनी हरियाली हो जाती कि गाँव और भी खूबसूरत हो जाता। घास। पेड़, पौधे। देखकर जी जुड़ जाता। परन्तु घास में साँप-बिच्छू! ऐसे ही बारिश में गेंद-गप्पा खेलते हुए घास से गेंद उठाते समय एक बिच्छू ने काट लिया था मुझे। मैं घबरा गया कि बहुत डाँट पड़ेगी सो घर पर किसी को बताया ही नहीं। जब ज़हर चढ़ने लगा और हाथ सूज गया तो बताया। पिताजी ने पहले तो दो थप्पड़ लगाए और उसके बाद ही इलाज शुरू किया। तब पिता लोग हर मौसम में थप्पड़ जड़ दिया करते थे।

अब शहरी बच्चों को बरसाती पहने, गाड़ियों में बैठकर स्कूल जाते देखता हूँ तो अपना गाँव बहुत याद आता है। दुख की बात यह है कि वहाँ अब भी नहीं बदला है। स्कूल की इमारत अभी भी चूती है, कीचड़ अभी भी उतना ही है और स्कूल में नित्य "रेनीडे" होने लगा है। चकमक

तुम्हारा पिन होल कैमरा

ग्रहण को नंगी आँखों से, एक्स-रे फिल्म से देखना आँखों के लिए बेहद खतरनाक है। इसलिए यह गलती कभी न करना! ग्रहण देखने का एक सुरक्षित तरीका है उसे पिन होल कैमरे से देखना। अभी तो तुम्हारे पास वक्त भी काफी है। इसलिए अभी से अपने और दोस्तों के लिए ऐसे कैमरे बना सकते हो। कैमरे के लिए दो पुराने पोस्टकार्ड ले लो। 1 उन्हें गोल मोड़कर दो नलियाँ बना लो – एक नली दूसरी से थोड़ी पतली होनी चाहिए ताकि वे एक-दूसरे में आसानी से फँस जाएँ। नली बनाने के लिए गोंद की जगह फेवीकॉल हो तो बेहतर।

मोटी नली के एक तरफ काला कागज़ चिपका दो। इसके लिए कार्बन-पेपर का इस्तेमाल किया जा सकता है। काले कागज़ के बीचोंबीच ऑलपिन से एक बारीक छेद कर दो।

2 इसी तरह पतली वाली नली के एक सिरे पर सफेद कागज़ चिपका दो। इस कागज़ पर थोड़ा-सा तेल पोत दो। इससे कागज़ अल्प-पार्दर्शक हो जाएगा। इसे हम पर्दे वाली नली कहेंगे। 3 पर्दे वाली नली को काले कागज़ वाली नली के अन्दर डालो। इस कैमरे के छेद के आगे एक जलती हुई मोमबत्ती रखो और दूसरी तरफ से पर्दे पर देखो। यही है तुम्हारा पिन होल कैमरा।

सूर्यग्रहण देखने के लिए इससे थोड़ा बड़ा पिन होल कैमरा बना सको तो बेहतर होगा। उसके लिए बड़ा डिब्बा ले सकते हो। पर उसमें छेद तो छोटे कैमरे बराबर ही होगा। कार्बनपेपर वाली सतह को सूरज की ओर रखो और परदे पर सूर्यग्रहण देखो!

(साभार *बाल वैज्ञानिक*, कक्षा 7)

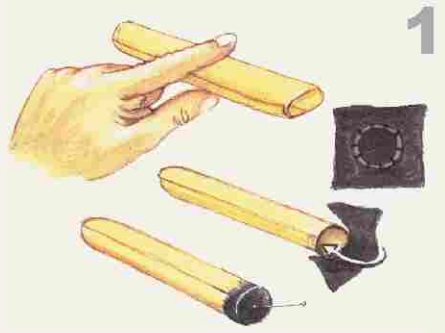

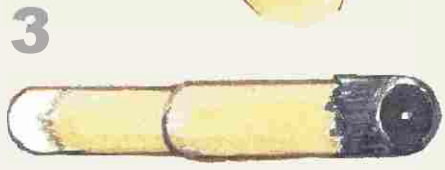

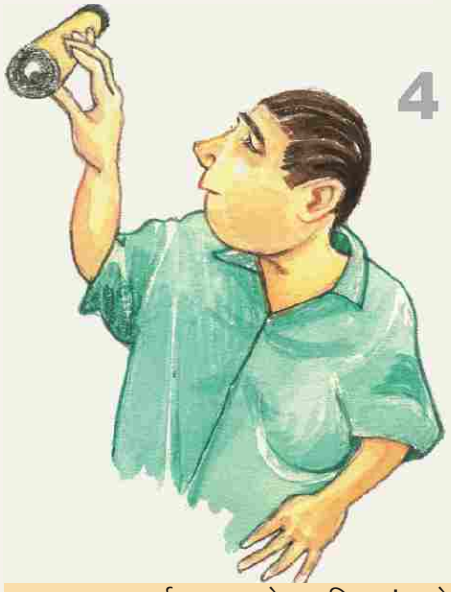

सूर्य ग्रहण को सुरक्षित ढंग से देखने के चश्मे मुफ्त पाने के लिए लिखें।

पताः एकलव्य
ई-10 शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर
भोपाल 462016 म. प्र.